Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक योगदान

प्रो. रश्मि कुमार
हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सारः
आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र को नई चेतना दी। जयशंकर प्रसाद न केवल हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में एक हैं, बल्कि हिंदी के श्रेष्ठ कथाकार, नाटककार और निबंधकार भी हैं। प्रसाद जी की कालजयी रचना 'कामायनी' संपूर्ण हिंदी काव्य की अनुपम कृति है, जिसमें मानव जीवन के अंतर्विरोधों, संघर्ष और व्याकुलता का उन्होंने बेहद गंभीर व भावपूर्ण चित्रण करने के साथ ही यथार्थ व मानवीय मूल्यों को नया आयाम भी दिया। 'कामायनी' काव्य खंड जहां उन्हें महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है, वहीं कथा, नाटक व निबंध लेखन के क्षेत्र में भी वे एक बेहद गंभीर साहित्यकार के रूप में स्थापित हैं। जयशंकर प्रसाद ने प्रतिकूल पारिवारिक और व्यवसायिक दबावों के बावजूद साहित्य रचना को अपना संसार चुना और जीवन के तमाम झंझावतों को झेलते हुए इसमें डूबते चले गए। जीवन, चिंतन और साहित्य की इस त्रिधारा का उन्होंने जिस ईमानदारी से निर्वाह किया, वह अद्वितीय है, अनूठा है। प्रसाद जी ने अपनी लेखनी से न केवल काव्य जगत को आलोकित किया, बल्कि गद्य साहित्य में भी श्रेष्ठ रचनाएं दीं। तत्कालीन साहित्यिक विधाओं में उन्होंने विशेष परचम लहराया। चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।जयशंकर प्रसाद युग प्रवर्तक साहित्यकार थे।

शब्द संकेत : *साहित्य, छायावाद, प्रवर्तक, महाकवि, जयशंकर प्रसाद*

१. विषय प्रवेश

आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद के प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र को नई चेतना दी। जयशंकर प्रसाद न केवल हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में एक हैं, बल्कि हिंदी के श्रेष्ठ कथाकार, नाटककार और निबंधकार भी हैं। प्रसाद जी की कालजयी रचना 'कामायनी' संपूर्ण हिंदी काव्य की अनुपम कृति है, जिसमें मानव जीवन के अंतर्विरोधों, संघर्ष और व्याकुलता का उन्होंने बेहद गंभीर व भावपूर्ण चित्रण करने के साथ ही यथार्थ व मानवीय मूल्यों को नया आयाम भी दिया। 'कामायनी' काव्य खंड जहां उन्हें महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित करता है, वहीं कथा, नाटक व निबंध लेखन के क्षेत्र में भी वे एक बेहद गंभीर साहित्यकार के रूप में स्थापित हैं। महज सैंतालीस साल के अपने अल्प जीवनकाल में जयशंकर प्रसाद ने कविता और कहानी के क्षेत्र में समान रूप से वृहद रचनाएं रचीं। उनके काव्य संग्रह 'लहर' में एक कविता की ये पंक्तियां हैं– 'छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएं आज कहूं? क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूं? सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा? अभी समय भी नहीं थकी–सोई है मेरी मौन–व्यथा।'प्रसाद जी की कविता के अलावा 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आंधी' और 'इंद्रजाल' प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। उनकी कहानियों में प्रेम व सामाजिक द्वंद्व के साथ ही सांस्कृतिक चेतना का समावेश है, जो मानव समाज को उत्प्रेरित करती है।

जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठिा कान्यकुब्ज वैश्य परिवार में माघ शुक्ल 10, संवत् 1946 को हुआ था। उनके पिता का नाम श्री देवी प्रसाद थे। काशी में वे सुघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध थे। इसी से लोग प्रसाद जी को भी 'सुघनी साहू' कहते थे। उनके बड़े भाई का नाम श्री शम्भूरन था। पिता की मृत्यु के बाद श्री शम्भूरत्न को ही गृहस्थ जीवन का भार वहन करना पड़ा। प्रसाद जी उस समय काशी के क्वींस कॉलेज में सातवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। उन्हें कॉलेज से उठाकर उनके बड़े भाई ने दुकान का काम सौंपा और घर पर ही उनकी शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया। पं. दीनबन्धु ब्रह्मचारी प्रसाद जी को वेद और उपनिषद् पढ़ाते थे।प्रसाद जी सरल, उदार, मृदुभाषी, स्पष्ट वक्ता और सहासी व्यक्ति थे। दानशीलता उनमें बहुत थी। उनकी मनोवृत्ति धार्मिक थी। वे शिव के उपासक और अपने जीवन में संयमी थे।

जयशंकर प्रसाद ने प्रतिकूल पारिवारिक और व्यवसायिक दबावों के बावजूद साहित्य रचना को अपना संसार चुना और जीवन के तमाम झंझावतों को झेलते हुए इसमें डूबते चले गए। जीवन, चिंतन और साहित्य की इस त्रिधारा का उन्होंने जिस ईमानदारी से निर्वाह किया, वह अद्वितीय है, अनूठा है। प्रसाद जी ने अपनी लेखनी से न केवल काव्य जगत को आलोकित किया, बल्कि गद्य साहित्य में भी श्रेष्ठ रचनाएं दीं। तत्कालीन साहित्यिक विधाओं में उन्होंने विशेष परचम लहराया। चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।जयशंकर प्रसाद युग प्रवर्तक साहित्यकार थे। उनका रचनाकाल सन् 1909 से 1936 तक माना जाता है। यह वह समय था जब भारत अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर आजाद होने के लिए कसमसा रहा था। भारत की अध्यात्मवादी जीवन दृष्टि और पश्चिम की भौतिकवादी सोच के बीच जबरदस्त संघर्ष छिड़ा था। रूढ़ीवादी परंपराओं और सुधारवादी विचारधाराओं का टकराव चल रहा था। ऐसे समय में प्रसाद जी ने अपनी सशक्त लेखनी से संपूर्ण राष्ट्रीय चेतना को नई गति दी।

हिंदी साहित्य के इतिहास की इस महान विभूति ने बहुत ही कम उम्र में 15 नवंबर, 1937 ई. को इस संसार से विदा ले ली। जयशंकर प्रसाद का पुश्तैनी मकान बनारस के सराय गोवर्धन मोहल्ले में आज भी जर्जर अवस्था में मौजूद है। इस पुराने मकान के एक बड़े परिसर में प्रसाद जी का प्रिय शिव मंदिर हैं। यहां के पुजारी बताते हैं कि यहीं बैठकर उन्होंने 'कामायनी' लिखी थी। पहले इस अहाते के चारों कोणों में एक–एक कुआं था जो अब मिट्टी से पूरी तरह ढक गए है। सिर्फ मंदिर वाला कुआं बचा है। प्रसाद जी की एकमात्र संतान पुत्र रद्यशंकर प्रसाद भी अब नहीं रहें। उनके छह बेटे हैं, जिनकी ढेरो संतानें वंशज के रूप में हैं मगर वे सभी इस महान विभूति की विशिष्टता से अनभिज्ञ जैसे हैं। साहित्यकार प्रसाद जी के न कोई उत्तराधिकारी है और न ही उनकी विरासत को सहेजने–संवारने वाला। सच तो यह है कि महान विभूति के परिवार को पूछने वाला भी कोई नहीं है।

प्रसाद जी की रचनाएँ– प्रसाद जी हिन्दी साहित्य के प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। उन्होंने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अपना स्वतन्त्र मार्ग बनाया था। उन्होंने नाटक, उपन्यास, काव्य, निबन्ध, आलोचना इन सब विषयों में उत्कृष्ट रचनायें की थीं। काव्य की दृष्टि से उनकी रचनायें इस प्रकार हैं

१.चम्पू– उर्वशी और बभ्रुवाहन,

२.महाकाव्य– कामायनी,

३.काव्य–रूपक– करुणालय,

४.खण्ड–काव्य– प्रेम–राज्य, प्रेम–पथिक, महाराणा का महत्त्व और आँसू,

५.गीत काव्य– शोकोच्छवास, कानन कुसुम, चित्राधार, झरना और लहर।

गद्य के क्षेत्र में 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'अजातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी', 'राजश्री' आदि। नाटक– 'छाया प्रतिध्वनि', 'आकाश–दीप' । कहानी संग्रह दृ 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती', (अपूर्ण) । उपन्यास– 'काव्यकला' और अन्य निबन्ध शीर्षक, निबन्ध संग्रह आदि उनकी प्रमुख रचनायें हैं।

२.प्रसाद जी की काव्य– प्रतिभा का विकास

प्रसाद जी का कविता–काल 1962 सं. से आरम्भ होता है। उस समय वे ब्रजभाषा में कविता करते थे। द्विवेदी जी के प्रभाव से वे खड़ी बोली में रचनायें करने लगे। लेकिन उन्होंने द्विवेदी जी कालीन नीतिवाद इतिवृत्तात्मक शैली को नहीं अपनाया। वे बंगला की गीति–काव्य–शैली से अधिक प्रभावित थे। इसलिये वे उसी ओर झुके। 'करुणालय', 'प्रेम पथिक', 'कानन कसुम' और 'महाराणा का महत्त्व, में उन्होंने वही शैली अपनायी। यहाँ तक (सं. 1975) पहुँचकर उनके कवि जीवन के दो प्रारम्भिक अध्याय समाप्त हो गये।प्रसाद जी के कवि–जीवन का तीसरा अध्याय 'झरना' (सं. 1975) के प्रकाशन से प्रारम्भ हुआ। हिन्दी–काव्य साहित्य में उनकी यह अभिनव रचना थी। इसमें उन्होंने 'कानन कुसुम' आदि की शैली में भिन्न स्वछन्दतावाद की काव्य–शैली अपनायी। स्वच्छंदतावाद की काव्य–शैली हिन्दी जगत् के लिये सर्वथा नवीन नहीं थी। इस शैली में उनके पूर्व पं. श्रीधर पाठक आदि रचनायें कर चुके थे। प्रसाद जी की इस शैली में उनके अपनेपन के अतिरिक्त यदि कोई उल्लेखनीय विशेषता थी तो वह यह कि इसमें छायावाद के अंकुर वर्तमान थे। इस काव्य के पश्चात् सात वर्ष तक वे नाटक लिखने और छायावाद के अध्ययन में संलग्न रहे। फलस्वरूप सं. 1982 में उनकी प्रौढ़ रचना 'आँसू' का प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ। इस समय तक हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं में छायावादी रचनायें अवश्य प्रकाशित होने लगी थीं, लेकिन काव्य–संग्रह के रूप में किसी की रचना सामने नहीं आयी थी। छायावादी काव्य में 'आँसू' का ही प्रथम स्थान था। इसके पश्चात् सं. 1994 में 'झरना' का प्रथम और फिर सं. 1988 में 'आँसू' का संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण निकला। इस प्रकार प्रसाद जी को छायावाद की भाव–भूमि पर उतरने में लगभग 13–14 वर्ष लग गये।

'आँसू' के द्वितीय संस्करण के पश्चात् सं0 1990 में 'लहर' का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशन से प्रसाद जी के कवि–जीवन का चौथा और अन्तिम अध्याय प्रारम्भ हुआ। इसमें उन्होंने अपना रहस्यवादी दृष्टिकोण व्यक्त कर अपनी काव्य–प्रतिभा को चरम सीमा पर पहुँचा दिया और फिर इसके दो वर्ष बाद ही सं. 1992 में वे हमें 'कामायनी' जैसी अद्भुत महाकाव्य देने में समर्थ हुए यह महाकाव्य छायावाद–रहस्यवाद–युग की अभूतपूर्व देन है। इसके मुकाबले का महाकाव्य खड़ी बोली में अब तक नहीं लिखा गया है।

काव्य प्रवृत्तियाँ

प्रसाद जी मूलतः कल्पना और भावना के कवि हैं। अपनी समस्त रचनाओं में उन्होंने अपने कवि–हृदय को ही प्रधानता दी है। भावना के क्षेत्र में वे मुख्यतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। सौन्दर्य के भौतिक आकर्षण की उन्होंने अवहेलना नहीं की, लेकिन उसको ऐन्द्रिकता के शिखर से ग्रसित नहीं किया है। प्रसाद जी ने अपने काव्य में नारी भावना को भी स्थान दिया है। इस दृष्टि से उनका महाकाव्य 'कामायनी' सर्वोत्तम है। 'कामायनी' में श्रद्धा नारी का प्रतीक है। नारी अपने इसी रूप में चिरसंगिनी है। वह स्त्री (श्रद्धा) पुरुष (मनु) के नीति च्युत हो जाने पर भी उनका साथ नहीं छोड़ती और उनको कल्याण का मार्ग दिखाती है। इस प्रकार पुरुष के जीवन में नारी ही सौन्दर्य, सन्तुलन और शक्ति

का विधान करती है। नारी में इस गुण का आविर्भाव आत्म समपर्ण द्वारा होता है। वह अपना सब कुछ खोकर पुरुष के जीवन को सार्थक करती है।

प्रसाद जी प्रकृति– प्रेमी भी हैं। उनके प्रकृति प्रेम ने ही उनके काव्य का शृंगार किया है। लेकिन उनके प्रकृति–चित्रण की शैली सर्वथा भिन्न है। उन्होंने प्रकृति में अपने भावों की छाया देखी है और वे उससे अपना सम्बन्ध जोड़ने के लिये व्याकुल हो उठे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद जी अपने कवि–रूप में अत्यन्त समर्थ हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य को जिन भावों, विचारों और कल्पनाओं में सम्पन्न किया है उसकी स्थायी महत्व है। आज की यांत्रिक सभ्यता में पीड़ित और शोषित मानव को उन्होंने 'कामायनी' द्वारा जो संदेश दिया है वह अमर है।

३.साहित्यिक सर्वेक्षण

वाजपेई, एन.डी. (2013)जयशंकर प्रसाद को हिन्दी काव्य में छायावाद की स्थापना का श्रेय जाता है। उनके द्वारा रचित खड़ी बोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म और व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई।उनकी काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है, जो कामायनी तक पहुंचने में समर्थ हुआ। जयशंकर प्रसाद के बाद के कई प्रगतिशील और नई कविता दोनों धाराओं के प्रमुख आलोचकों ने उनकी लेखनी की प्रशंसा की है। इनकी वजह से ही खड़ी बोली हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गई है।

गजानन माधव(2015)जयशंकर प्रसाद के लेखन का दूरगामी प्रभाव साहित्यिक एवं सामाजिक माध्यमों पर व्याप्त होता है। उनकी रचनाएं और लेखन समाज को सकारात्मक और दर्शनीय बदलाव की ओर प्रेरित करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि महाकवि प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे अच्छे पत्रकार और व्यापारी भी थे और सबसे बढकर वे एक महान मानव थे। जब तक यह धरती, चांद, सूर्य आदि हैं, अपने उपर्युक्त सभी महान गुणों के कारण वे हमेशा सम्मान के साथ स्मरण किए जाते रहेंगे। कवि साहित्यकार के रूप में और मानव के रूप में उनकी प्रतिभा एंव कार्यकुशलता अजोड़ थी। अब भी हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उनका जोड़ मिल पाना दुर्लभ बना हुआ है।

शर्मा, जे.पी. (2017)प्रसाद का दर्शन भारतीय इतिहास–प्रवाह में अर्जित, गँवाई गई तथा फिर से प्राप्त नैतिक तथा सौन्दर्यात्मक, व्यावहारिक तथा रहस्यात्मक, अंतर्दृष्टियों का समन्वयन करने का साहसिक प्रयास है। उनकी कविकल्पना सदैव उनके निजी जीवन–अनुभवों तथा अन्वीक्षणों से संयमित तथा संचरित रही। उनका कथा साहित्य तथा नाट्य साहित्य अपने सारे रूमानी तथा रहस्यात्मक वातावरण के बावजूद गहरे मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद की नींव पर खड़ा है।

प्रसाद जी छायावाद के प्रवर्तक, उन्नायक तथा प्रतिनिधि कवि होने के साथ–साथ एक महान कवि, सफल नाटककार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, कुशल कहानीकार तथा गंभीर निबंधकार थे। इन्हें भारतीय संस्कृति और सभ्यता से अगाध प्रेम था। भारत के उज्जवल अतीत को इन्होंने अपने साहित्य में सफलतापूर्वक अंकित किया है। इनके नाटक 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' और 'अजातशत्रु' राष्ट्र के गौरवमय इतिहास का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते हैं।जयशंकर प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकारों में अग्रगण्य थे। इन्होंने अपनी कविताओं में सुक्ष्म अनुभूतियों का रहस्यवादी चित्रण प्रारंभ किया, जो इनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। इनके इस नवीन प्रयोग ने काव्य जगत् में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी और छायावादी युग का सूत्रपात किया। इन्होंने काव्य–सृजन के साथ ही "हंस" एवं "इन्दु" नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कराया।"कामायनी" प्रसाद जी की छायावादी युग

की ही नहीं सम्पूर्ण आधुनिक काल का कलात्मक महाकाव्य है। इस पर इनको 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' ने "मंगलाप्रसाद पारितोषिक" पुरस्कार प्रदान किया था। इसके अतिरिक्त 'इन्द्रजाल', 'ऑधी' आदि इनके कहानी–संग्रह हैं। अतः 'आकाशदीप' और 'पुरस्कार' कहानियां विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं इनकी कहानियों और नाटकों में भावुकता पूर्ण कवित्व शक्ति के दर्शन होते हैं।

४.प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएं एवं कृतियां निम्नलिखित हैं–

काव्य–ग्रन्थ ⇒ ऑसू, कामायनी, चित्राधार, लहर, झरना, प्रेम–पथिक, करुणालय, कानन–कुसुम, महाराणा का महत्व।

कहानी–संग्रह ⇒ ऑधी, इन्द्रजाल, आकाशदीप, प्रतिध्वनि, पुरस्कार, छाया, देवरथ आदि। (69 कहानियां हैं)

नाटक ⇒ चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूँट, विशाख, कल्याणी–परिणय, राजश्री, अग्नि–मित्र, सज्जन और प्रायश्चित आदि।

उपन्यास ⇒ तितली, कंकाल व इरावती (अपूर्ण) आदि।

निबंध–संग्रह ⇒ काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध ।

चम्पू ⇒ प्रसाद जी ने कुल 3 चंपू लिखें हैं– उर्वशी, बभ्रुवाहन और उर्वशी चम्पू (1906 ई.) ।

५.जयशंकर प्रसाद के निबन्ध

काव्य और कला, रहस्यवाद, रस, नाटकों में रस का प्रयोग, नाटकों में आरंभ, रंगमंच, आरंभिक–पाठ काव्य यथार्थवाद और छायावाद पहले हंस में प्रकाशित हुए थे। बाद में पुस्तकाकार "काव्य और कला और अन्य निबन्ध" नाम से संपादित होकर प्रकाशित हुए। बाद में इन्होंने शोध परक ऐतिहासिक निबंध यथा दृ सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यवर्त और उसका प्रथम सम्राट आदि भी लिखें।

६.जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली

प्रसाद जी की भाषा पूर्णतः साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। भाषा प्रवाहयुक्त होते हुए भी इन्होंने संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली को अपनाया है जिसमें सर्वत्र ओज एवं माधुर्य गुण विद्यमान हैं। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसाद जी ने लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया है।प्रसाद जी की शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। अलंकृत, चित्रात्मकता, संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित इनकी शैली अत्यन्त सरस एवं मधुर है।प्रसाद जी छायावादी कवि हैं। प्रेम और सौन्दर्य इनके काव्य का प्रधान विषय है। मानवीय संवेदना उसका प्राण है प्रकृति को संचेतन अनुभव करते हुए उसके पीछे परम सत्ता का आभास कवि ने सर्वत्र किया है। यही इनका रहस्यवाद है। प्रसाद जी का रहस्यवाद साधनात्मक नहीं है। वह भावसौंदर्य से संचालित प्रकृति का रहस्यवाद है। अनुभूति की तीव्रता, वेदना, कल्पना प्रवणता आदि प्रसाद काव्य की कतिपय अन्य विशेषताएं हैं।

७.प्रकृति–चित्रण

प्रसाद जी की प्रारंभिक रचनाओं में ही संकोच और झिझक होते हुए भी कुछ कहने को आतुर चेतना के दर्शन होते हैं। 'चित्राधार' में ये प्रकृति की रमणीयता और माधुर्य पर मुग्ध हैं। 'प्रेम पथिक' में प्रकृ ति की पृष्ठभूमि में कवि हृदय में मानव सौंदर्य के प्रति जिज्ञासा का भाव जगता है। 'ऑसू' प्रसाद जी का उत्कृष्ट, गंभीर, विशुद्ध मानवीय विरह काव्य है जो प्रेम के स्वर्गीय रूप का प्रभाव छोड़ता है। इसलिए कुछ लोग इसे आध्यात्मिक विरह काव्य मानते हैं।'कामायनी' प्रसाद काव्य की सिद्धावस्था है इनकी काव्य साधना का पूर्ण परिपाक है। कवि ने मनु और श्रद्धा के बहाने पुरुष और नारी के शाश्वत

स्वरूप एक मानव के मूल मनोभावों का काव्यमय चित्र अंकित किया है। काव्य, दर्शन और मनोविज्ञान की त्रिवेणी 'कामायनी' निश्चय ही 'आधुनिक काल की सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक रचना' है।

८.अध्ययन पद्धति

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

९.निष्कर्ष

प्रसाद जी का साहित्य अनन्त वैभव संपन्न है। वे भारत के चुने हुए कुछ आधुनिक श्रेष्ठ साहित्यकारों में हैं। जयशंकर प्रसाद जी की साहित्यिक विरासत लेखकों और पाठकों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रही है। मानवीय भावनाओं, गीतात्मक भाषा और गहरी दार्शनिक अंतर्दृष्टि की इनकी गहरी समझ ने इन्हें हिंदी साहित्य में एक स्थाई व्यक्ति बना दिया है।हिन्दी काव्य में जयशंकर प्रसाद के योगदान और सामाजिक परिवर्तन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने इन्हें भारत के साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाया है।

संदर्भ स्रोत

१. रमेश चंद्र शाह(2008) जयशंकर प्रसाद (भारतीय साहित्य के निर्माता) प्रकाशकः साहित्य अकादमी, दिल्ली।
२. शर्मा, जे.पी. (2017) प्रसाद के नाटकों का शास्त्री अध्ययन (दूसरा संस्करण)। वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली।:
३. वाजपेई, एन.डी. (2013)। जयशंकर प्रसाद (प्रथम संस्करण)। लोकभारती प्रकाशन. इलाहबाद।
४. आलोक श्रीवास्तव(:2022) स्वप्नलोक मेंआज जागरणः महाकवि जयशंकर प्रसाद की काव्य यात्रा–1, संवाद प्रकाशन, मेरठ,
५. गजानन माधव (2015)मुक्तिबोधः कामायनीः एक पुनवविचार, राजकमल प्रकाशन,, बारहवाँ संस्करण,, नई दिल्ली।
६. आलोक श्रीवास्तवः(2022) नील लोहित ज्वाल जीवन कीः महाकवि जयशंकर प्रसाद की काव्य यात्रा–2, संवाद प्रकाशन, मेरठ।